

M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. Ref.
Ser.

Title:

34
Gayatri Sahasranam

Scanned

834

834

गायत्री सहस्रनाम

: Gayatri Sahasranam		: Title
:	:	: Author
:	:	: Editor
:	:	: Year, Vols.
:	:	: Publisher
834	:	: Remarks

॥३॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गायत्री दीप्ति सप्त
नामलिख्यते ॥३॥ कैलासमुखमासीत ॥ तुषा
रकरशेखरं ॥ बभ्रोजलिभनमस्कृत्य ॥ परि
पृच्छति पार्वती ॥१॥ पार्वत्युवाच ॥ किं विन्यस्य
त्वया देवा ॥ स्वशरीरे निरंतरं ॥ कथमेता
दृशं कांति ॥ कथं तेषां समृद्धयः ॥२॥ सर्वज्ञत्वं प्र
नुत्वं च ॥ कथं कथमवाश्रय ॥ कपया ब्रुहि दे
वेश ॥ प्रसन्नो सियदिप्रजो ॥३॥ नगवनविवि ॥१॥

धावेया ॥ श्रोतुमिच्छामि प्रजो ॥ इदानीं श्रोतु
मिच्छामि ॥ गायत्र्या श्रमनो हरं ॥४॥ सहस्रदेव
देवेश ॥ कपया वक्तुमर्हसि ॥ यद्यहं प्रियतेना
र्यो ॥ यद्यहं प्राणवल्लभा ॥५॥ इति श्रुत्वा वचो दे
व्य ॥ विदस्य प्रनुराश्वरः ॥ श्रुत्वा मिति चाश
ष्या ॥ जगदानंददायिका ॥६॥ इत्युवाच ॥
शृणु वीरे रहस्यमेकं स्यात्त्वमग्रनचोदितं
गोपीतं सर्वमंत्रेषु ॥ सिद्धिदस्तौ त्रमुत्तमं ॥७॥

॥२॥

स०

सर्वसौभाग्यजनकं॥ सर्वसंपत्तिदायकं॥
सर्ववश्यकरंलोके॥ सर्वप्रत्यक्षिनाशनं॥ १॥
सर्ववादिमुखदुंसि॥ निग्रहानुगहेवरात
त्यीत्यकथयिष्यामि॥ सुगोप्यमतिदुर्लभं॥
॥२॥ सर्वसौभाग्यजनकं॥ सर्वज्ञानमयंशि
वं॥ परापरात्मपरमं॥ कालब्रह्मस्वरूपिणं
॥३॥ गायत्रीसामदेशानी॥ छंदसायपरब
ह्मात्मिकामता॥ तां देवीं च वरा रोहे॥ चेतसा ॥२॥

चिंतयाम्यहे॥ ११॥ ऐश्वर्यं च ततः प्रीते॥ वरदा
दित्यमेव च गायत्रीदिव्यसहस्रं॥ स्वप्नया
सामयापियत्॥ १२॥ रुषिकश्च समाख्यातो
माहादेवो महेश्वरः॥ देवतादेवजननी॥ छं
दसायदिकीर्तिदं॥ १३॥ धर्मार्थकाममोक्षा
र्थं॥ विनियोगउदारितः॥ सर्वभूतांतरिंध्या
त्वा॥ पद्मासनवरः शुचिः॥ १४॥ ततः सहस्रना
मेदं॥ पठितव्यं मुमुक्षुभिः॥ सर्वकार्यकरं पु

एवं॥ महापातकनाशने॥१५॥ सर्वगुह्यतमं दि
व्यं॥ सर्वलोकहितप्रदं॥ मंत्राणां परमं दि
व्यं॥ नयदुःखषडुर्ध्विवत्॥१६॥ मूलेन क
रषडंगं न्यासः॥ पूर्ववत्स्थाने॥ अथ नामव
लिः॥ तकाररूपी तद्रूपी॥ तद्यत्पर्यस्वरूपि
णिः॥ तपःस्वाध्यायनिरता॥ तपस्वी वज्रि
दां वरा॥१॥ तत्कीर्तिगुणसंपन्ना॥ तथ्यवा
दितपोनिधी॥ तत्त्वदैकार्यसंधाना॥ तपो

लोकनिवासिनी॥२॥ तरुणादित्यसंकाशा
तप्तकोचनभूषिता॥ तमोपहारिणी तां त्रीं
संनिपातनिवारिणी॥३॥ तां त्रीं कतरुणी
ते त्रीं॥ तारकेशी तमलिनी॥ तत त्रीं नुवनां
तस्या॥ तारिणी ताररूपिणी॥४॥ तर्करूपी त
र्कवादी॥ तर्कशास्त्रविचारिणी॥ तर्कवा
दी तर्कमुखी॥ स्तवाज्ञापरिपालना ५ तं
त्रसारा तंत्रमाता॥ तंत्रमार्गप्रदर्शनी॥ तं

॥४॥

स०

त्रयं चाविधानज्ञा ॥ तत्र घ्नी तत्र साक्षिणी
॥६॥ तदेकध्याननिरता ॥ तत्त्वज्ञप्रबोधिनी
॥ तन्नमज्जप्रसंघीता ॥ तपस्वीजनसेविता
॥७॥ सकाररूपा सावीत्री ॥ सर्वमाता सनातनी
॥ समस्तजगदाधारा ॥ सत्यसंकल्पासिद्धिनी
॥८॥ समार्गनिलया सौम्या ॥ समार्गफलदायिनी
॥ संसारदुःखशमनी ॥ सर्वयोगप्रसादिनी
॥९॥ सफला सत्यसंकल्पा ॥५॥

सत्यसत्यप्रसादिनी ॥ संतपजननी सारा
सर्वलोकनिवासिनी ॥१०॥ समुत्तमशसाध्या
॥ सामगानप्रिया सदा ॥ समाना सामधेयी च
॥ समस्तसुरसेविता ॥११॥ सर्वसंपत्तिजननी
॥ समधासिंधुसेविनी ॥ सर्वोत्तुंगा संगहीना
॥ सद्गुणसकलेष्टदा ॥१२॥ सनकादिमुनिर्धेया
॥ समानाधिकवर्जिता ॥ संख्यासाक्षिमुधावासा
॥ साध्या साध्यप्रसादिनी ॥१३॥ सं

॥५॥

मार्गसाध्यनिलया॥समुतीर्णसदाशिवा
सर्ववेदांतनिलया॥सर्वशास्त्रार्थवादि
नी॥१४॥सदस्रदलपलम्प्या॥सर्वज्ञाविश्व
सर्वतोमुखी॥समयसमयसारसतां
षडूंष्टिमेदिनी॥१५॥सप्तकोटिमहामंत्रा
मातासर्वप्रसादिनी॥सगुणसंप्रमासा
क्षी॥सर्वचैतन्यरूपिणी॥१६॥श्री-श्रंवा॥
सत्कीर्तिःसाल्विकीसा॥ध्वी॥सच्चिदानंद॥५॥

रूपिणी॥संकल्यरूपिणीसिद्धिः॥सालिग्रा
मनिवासिनी॥१७॥सर्वोपाधि विनिमुक्ता
नित्यज्ञानप्रबोधिनी॥विकाररूपाविप्र
श्रीविप्रसाधनतत्परा॥१८॥विप्रिणीविप्र
कल्याणी॥विप्रवाक्यस्वरूपिणी॥विप्रवे
कल्यशमनी॥विप्राविप्रप्रसादिनी॥१९॥
विप्रवद्याविप्रसंध्या॥विरं॥चीहृदिमंगला
विप्रजोजनसतुष्टा॥विप्रलयनिवासिनी

६ ॥ २० ॥ विप्रमंदिरमध्यस्था ॥ विप्रवादवि
 नोदिनी ॥ विप्रवादविनिर्मुक्ता ॥ ५ ॥ विप्रह
 ८ ॥ विमोचनी ॥ २१ ॥ विप्रत्राताविप्रगो
 स० ॥ विप्रगोत्रप्रवर्दिनी ॥ विप्रपूजनसंतु
 ष्ठा ॥ विष्णुरूपाविनोदिनी ॥ २२ ॥ विष्णुमाता
 विष्णुमध्या ॥ विष्णुनैर्जीर्णवित्रिणी ॥ वैष्ण
 वविष्णुनगिनी ॥ विष्णुमयाविलासिनी
 ॥ २३ ॥ विकाररहिताविद्या ॥ विज्ञानघनरू ॥ ६

पिणी ॥ विश्वसाहि विश्वयनी ॥ विश्वामित्र
 प्रसादिनी ॥ २४ ॥ विश्वरूपिणीविशालाक्षी
 विश्वनाथप्रसादिनी ॥ विविधाविश्वसंक
 ल्या ॥ विकल्पाविश्वसाहिणी ॥ २५ ॥ विष्णुचैत
 न्यनिलया ॥ विमुखारिविवादिनी ॥ विवेकी
 विबुधानंदा ॥ विजयाविश्वमंगला ॥ २६ ॥ वि
 श्वंनरीसमासाध्या ॥ विश्वन्त्रमणकारिणी
 विनायकीविनोदग्री ॥ वीरगोष्ठीविवर्जिता

७ ॥२७॥ वीरहत्या प्रशमनी ॥ विनम्रजनया विनी
विरवा विविधा कारा ॥ विनोदी जनमोक्षिणी
॥२८॥ तुकाररूपा तुल्य ॥ श्रीतुलसीवनवा
सिनी ॥ तुलायामा तुला तुल्य ॥ तुल्यो जोषी
तुलेश्वरी ॥२९॥ तुरंगी तुरंगारूढा तुरंगी
पदमोचिनी ॥ तुरंगवदना मोदा ॥ तुक्तादान
फलप्रदा ॥३०॥ तुलामाया ध्यास्तानतुष्टा
तुष्टिपुष्टिप्रसादिनी ॥ तुरंगमदसंतुष्टा ७

त्वरिता तुलमध्यामा ॥३१॥ तुंगो तुंगा तंगकु
त्वा ॥ तुहिना चल संरक्षिता ॥ तुङ्गरादिस्तुति
प्रीता ॥ तुषारकर रशे खरी ॥३२॥ संतुष्टा तु
ष्टजननी ॥ तुष्टलोकनिवासिनी ॥ तुलाधा
रा तुलामध्या ॥ तुलस्त्रा तुलरूपिणी ॥३३॥
तुरीयगुणजंजीरा ॥ तुर्यनामस्वरूपिणी
तुर्यविद्यामध्यसंस्था ॥ तुर्यशास्त्रार्थवादि
नी ॥३४॥ तुर्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा ॥ तुर्यवादवि

६ मोदिनी॥तुर्यवेदांतनिलया॥तुर्यज्ञानप्र
 स० बोधिनी॥३५॥तुर्यनादातुनिलया॥तुर्यनिं
 दस्वरूपिणी॥तुर्यादनक्तजननी॥तुर्य
 मार्गप्रदर्शनी॥३६॥वकाररूपावागेशी
 वरेण्यावरसंस्थिता॥वरवरिष्ठावैदेहि
 वैद्यशास्त्रप्रदर्शनी॥३७॥वैकल्याशमनी
 वाणी॥वाञ्छितार्थफलप्रदा॥वयस्कावय
 मध्यस्का॥वयोवस्काविवर्जिता॥३८॥ ६

वादिनीवादिनीवस्का॥वाज्रधरवेदिनी॥वा
 नप्रस्काशमस्का॥यी॥वनदुर्गावनालया॥३९॥
 वनज्वालीवनचारी॥वनवासविर्नेदिनी॥वसि
 ष्वामदेवादि॥मध्यासंध्यप्रसाधिनी॥४०॥वा
 लाकीवाज्मयीवारी॥वारुणीवारुणेश्वरी
 वैष्णवैद्यचिकित्सा॥वषट्कारीवसुंधरी॥४१॥
 वसुमातावसुत्राता॥वसुजन्ममनोहरी॥व
 सुप्रदावासुदेवी॥वसुदेवमनोहरी॥४२॥वा

६ सवर्चितपादश्री वासवारिविनाशनी वागिशी
 वाञ्छवस्त्रायी वासवीवसिवावसी ॥४३॥ वा
 मदेवीवरारोहा वायवोषणतत्परा वाच
 स्यतिसमासिध्या वागेशीवाचकीवचा ॥४४॥
 रेकाररूपिणीरेवे रेवातीरनिवासिनी रे
 किणीरेवतीरक्षा रुद्रजन्मरजस्वला ॥४५॥
 रेणुकारमणीमध्या रेतोवृद्धिरतारती रा
 वणारिहृदानंदा राजाश्रीराज्यशेखरी ६ ६

॥४६॥ रणमध्यारथारूठा रविकौटिसमप्रभा
 ॥ रविमंडलमध्यस्त्रा रजनीरविलोचना ॥
 ॥४७॥ रथोगपालिरक्षोघ्री राकिणीरावणा
 र्विता परंजादिकन्यकाराध्या राज्यधाराज्य
 वद्धिनी ॥४८॥ रजतादीशफलाफलदा रम्य
 राजीवलोचना रमावाणिसमासाध्या राज्य
 धायीरथोत्सवा ॥४९॥ रेतोवृद्धिरवोत्साहा
 रोगहृदोगधारिणी रंगहृदंगमधुरा रंगमे

३० उपमध्यगा ॥ ५० ॥ रंजिनी रजनी राजा रमा
स० रेखा रवीरणा ॥ राजिणी राजते राज्या राज
राजेश्वरार्चिता ॥ ५१ ॥ राजस्वति राजनीति
स्तवाराजीववासिनी ॥ राघवार्चितपाद
श्री ॥ रामवारा मवप्रिया ॥ ५२ ॥ रत्नसागर
मध्यस्था ॥ रत्नर्द्धिपनिवासिनी ॥ रत्नप्रका
रमध्यस्था ॥ रत्नमण्डपमध्यगा ॥ ५३ ॥ रत्नसि
हासनासीना ॥ रत्नकांचनचूषणा ॥ रत्न ३०

निषेकसंतुष्टा ॥ रत्नांगी रत्नदायिनी ॥ ५४ ॥
णीकाररूपिणी नित्या ॥ नित्यतप्तनिरंजनी
णिप्रत्ययविशेषज्ञा ॥ नीलजीमूतसन्निभा
॥ ५५ ॥ निवारश्रुकवतान्वी ॥ नित्यकल्याण
रूपिणी ॥ नित्योत्सवानित्यनित्य ॥ नित्यानं
दस्वरूपिणी ॥ ५६ ॥ निर्विकल्यानिर्गुणस्था
निश्चिन्ताचिंतनाशनी ॥ निःसंशया संशय
यघ्नी ॥ निर्लोचालोचनाशनी ॥ ५७ ॥ निर्नवा

३३ नवतापघ्नी॥नितिशास्त्रविचारीणी॥निखि
लागममध्यस्था॥निखिलागमवासिनी
॥५६॥नित्योपाधिविनिर्मुक्ता॥नित्यकर्म
फलप्रदा॥नीलग्रीवानिराहाच॥निरंज
ननिरंजना॥५७॥नीवनीतप्रीयनारी॥न
वकार्णवतारिणी॥नारायणीनिराकारा
निपुणानिपुणप्रिया॥६०॥निर्मलानिर्मला
चारा॥निखिलागमवेदिनी॥निमिषा ३३

निमिषोत्पन्ना॥निमिषांडविदाहिनी॥६१॥
निर्वीतदीपमध्यस्था॥निश्चिंताचितना
शनी॥नीलवेणीनीलकंठा॥निर्विषाविष
नाशिनी॥६२॥नीलांशुकपरीधाना॥निंता
रीचनिरेश्वरी॥निस्वासस्वासमध्यस्था
नीपोध्याननिवाशिनी॥६३॥यकाररूपंयंत्रे
शीयंत्रमंत्रयशस्विनी॥यंत्राराधनसंतुष्टा
यजमानस्वरूपिणी॥६४॥यशस्विनीयका

३२

म०

रस्त्रा॥ यूपस्थं न निवाशिनी॥ यमघ्नी यमक
 ल्याच॥ यशः कीमा यतीश्वरी॥ ६५॥ यथा
 वियोगनिरता॥ यती विद्यापहारिणी॥ या
 तियज्ञाय यज्ञाया॥ यज्ञाय ज्ञेश्वरीवती
 ॥ ६६॥ यज्ञाय ज्ञय जुर्पक्ष्मा॥ यशो नि करका
 रुणी॥ यज्ञसूत्रपदा ज्येष्ठा॥ यज्ञकर्मफल
 प्रदा॥ ६७॥ यवा कुशप्रीया यामा॥ यवनि
 यवनाधिपा॥ यज्ञकर्ता यज्ञा नोक्ता॥ यज्ञो ३२

गी यज्ञवाहिनी॥ ६८॥ यज्ञसाक्षि यज्ञमु
 खी॥ यनुजुषा यज्ञसाक्षिणी॥ नाकाररू
 पानुदेशी॥ नडकल्याणदायिनी॥ ६९॥ नड
 प्रिया नडमुखी॥ नक्ता॥ नीडप्रदायिनी॥ ना
 श्वरी नैरवी नोगी॥ नवानी नवनाशिनी॥
 ६९०॥ नशक्ति का नडदायी॥ नडकाली
 नयंकरी॥ नगिनी त्वंदिनी नाग्या॥ नवबं
 धविमोचिनी॥ ७१॥ नामा नीम नखा नंगा

जंगुराजीमदर्शनी॥ श्री लीनलोपराजीरु
 नेरंजादिनयापहा॥ ११॥ नोगराज्ञानोगधात्री
 नगघ्नीनूरिनूषण॥ नूतिदानूतिधात्रीच
 नूपतित्यप्रदायिनी॥ १३॥ नामरीनामरी
 नारा॥ नवसंसारतारिणी॥ नेजासुखधा
 त्साहा॥ भांडवाद्यविनोदिनी॥ १४॥ गोकार
 रूपागोमाता॥ गुरुपत्तिर्गुरुजिरा॥ गोरो
 चनप्रियागौरी॥ गोविंदागुणवर्द्धिनी॥ १५॥ ३३

गोपालचेष्टासंतुष्टा॥ गोवर्द्धनविरोधिनी
 गोविंदरूपिणीगुप्ता॥ गोप्रीगोत्रविवर्द्धिनी
 ॥ १६॥ गीतागीतप्रीयायोगे॥ गोगागोकुल
 वर्द्धिनी॥ गोप्रीगोहृत्शमनी॥ गुठनिर्गुठ
 विग्रहः॥ १७॥ गोविंदजननीगुप्ता॥ गोपदा
 गोकुलोन्मवा॥ गोतमीगोमतीगौरी॥ गो
 सुखागुहवासिनी॥ १८॥ गोपालगोमयागू
 ढा॥ गोष्ठीगोपरवासिनी॥ गारूडीगुरुडश्रे

३४ ए॥ गारुडगुरुडध्वजा ॥ ७६ ॥ गंडकाजोता
 मीगंगा ॥ गो कुलागोत्रधारणी ॥ गगनस्था
 स० गयावासी ॥ गूढप्रितिगजध्वजा ॥ ८० ॥ देका
 ररूपादेवेशी ॥ देशिनीदेवतार्जिनी ॥ देव
 राजेश्वरार्द्धांगी ॥ दिनदैत्यविमोचिनी ॥
 ८३ ॥ देशकालपरिज्ञाता ॥ देशोपद्रवना
 शिनी ॥ देवमातादेवमोदा ॥ देवदानव
 मोहिनी ॥ ८२ ॥ देवेशार्चितपादश्री ॥ देव ३४

देवप्रसादिनी ॥ देवतार्थप्रशमनी ॥ देव
 स्यसवितुप्रिया ॥ ८३ ॥ देशांतरिदेशरू
 पा ॥ देवानयनिवासिनी ॥ देशभ्रमणकृदे
 व ॥ दिशस्वास्थ्यप्रदायिनी ॥ ८४ ॥ देवयंनि
 देवमाता ॥ देवसैन्यप्रपालिनी ॥ वकार
 रूपावाजेशी ॥ वाचात्मानसगोचरी ॥ ८५ ॥
 वैकुण्ठदर्शनीवैद्या ॥ वायूरूपावरप्रदा व
 क्रतुंजार्चितपदा ॥ वक्रतुंडप्रसादिनी

३५

॥६६॥ वैचित्रणीवसुमती ॥ वसुस्वासावसु
प्रिया ॥ वरशंकरितिचामुंडा वरशेहाव
रवरा ॥६७॥ वैदेहिजननीवैद्या ॥ वैदेहिशो
कहारिणी ॥ वेदमातावेदकन्या ॥ वेदरूप
विनोदिनी ॥६८॥ वेदांतवादिनीवेदा ॥ वेदा
तमिलयावरा ॥ वेदक्रमीवेदद्योषा ॥ वेद।
नादविनोदिनी ॥६९॥ वेदेशास्त्रार्थतत्व
ज्ञा ॥ वेदमार्गप्रदर्शनी ॥ वैदीककर्मफल ॥ ३५

दा ॥ वेदसारगतारणी ॥६०॥ वेदवाहीवेद
गुही वेदाश्वारथवाहिनी ॥ वेदवक्त्रावेद
गुह्या ॥ वेदांगिवेदवित्कवि ॥६१॥ स्थकाररू
पास्थामांगी ॥ श्यामश्यामसरोरुहा ॥ रपा
माचसालहस्ताच ॥ शतपत्रनिकेतनी ॥६२॥
सर्वहृत्सन्निविष्टाच ॥६३॥ सर्वप्रेरेपिडिस
दा ॥ सव्यापसव्यमार्गस्था ॥ सव्यसाचीस
हायनी ॥६४॥ सकलीसकलाधारा ॥ सार्वभौ

३६

स०

मस्य जाविनी॥ संतोषजननी सव्या॥ सर्वेशा
सर्वरंजिनी॥ ६५॥ सरस्वतीसमाराध्या॥ स
मडसिंधुसेविनी॥ संमोहनी सदा मोदा
सर्वमांगल्यदायिनी॥ ६५॥ समस्तनुवने
शानी॥ सर्वकर्मफलप्रदा॥ सर्वनशसदा
देवी॥ सर्वज्ञानप्रमोदिनी॥ ६६॥ सर्वदारि
द्राशमनी॥ सर्वदुःखविमोचिनी॥ सर्वरो
गप्रशमनी॥ सर्वपापविनाशनी॥ ६७॥ ३६

समद्रुही समगुणी॥ सर्वसाक्षी सनातनी॥ स
मार्द्धवाहिनी सांडी॥ सांध्रानंदपयोधरा॥ ६८॥
संकीर्णमंदारस्थायी॥ साकेतकुलपावनी
संहरिशंकरः शैरी॥ ६९॥ साकेतपुरवासिनी
॥ ७०॥ सबोधिनी समद्रुही॥ सम्यक्ज्ञान
स्वरूपिनी॥ सच्चितासुतिसंस्था॥ संपूर्णफ
लदायिनी॥ ७००॥ संपत्करि समानां जी॥ सर्व
लावण्यसंस्थिता॥ सद्धो॥ ७१॥ ७१॥

१७ संमार्गकुलपाविनी॥३०३॥समिद्धासमिधा।
संन्ता॥सामान्यासामवेदिनी॥समुतीर्णस
दाचारा॥संहारि॥सर्वपावनी॥३०४॥सर्वेशी
सर्वमाताच॥सर्वदुष्टविमोचनी॥सर्वशग
प्रशमनी॥सर्वयागफलप्रदा॥३॥संक्रसंमो
क्रमासंधी॥संग्रासंग्रहपूजिता॥संकटासं
कटाहारी॥सकुंकुमविलेपना॥४॥संमोह
संमनस्त्रायी॥संगोपोगजनप्रिया॥संस्थि १७

तासंस्थितप्रीता॥सत्यवादिसदामुखी॥५॥
धीकाररूपाधीरेशी॥धीराधीरप्रसादिनी
धीरोत्तमाधीरधीरा॥धीरस्त्राधीरशेखरी॥
६॥स्थितिस्थित्यास्त्रविष्ठाच॥स्तवतिस्त्र
लविग्रहाः॥धीराराध्यधीरवंद्या॥धीमातीधी
रमानसी॥७॥धीपदाधीपदास्त्रायी॥धीसा।
क्षीधीपदासुखी॥मकररूपामंत्रेशी॥महा
मंगलदेवता॥८॥मनोवैकल्यशमनी॥म

१८

म०

लयाचलवासिनी॥मलयध्वजराजश्री॥
मीनाक्षीमलयाचला॥१७॥महादेविमहारू
पा॥महानैरवपूजिता॥मनुविद्यामंत्रगुह्या
मंत्रमातामहेश्वरी॥१८॥मत्तमत्तंगगमना
मधुरामेरुमंडपा॥महानूतामहागुप्ता॥मह
मायविनाशनी॥१९॥महागौरीमहामारी
महावैरीविनाशनी॥महालक्ष्मीर्मदाक्षी
च॥मंदिरामंदिरालया॥२०॥मत्तंगतनया १८

माया॥महेश्वरप्रतिव्रता॥मत्तंगपीठनिलया
मंत्रिणीपरसेविता॥२१॥महायागसमासा
ध्या॥महायागप्रसादिनी॥मधुमांसा॥मधुखा
सा॥मधुसुदननेदिनी॥२२॥मांनिनामोहि
नामाध्वी॥माधवीमाधवार्चिता॥मधुकैट
जसेहारी॥महाकालिमनोमत॥२३॥मारी
चिर्मकरामारी॥मरुद्धिमरुद्धता॥महाल
क्ष्मीमहागौरी॥महिषासुरमदिनी॥२४॥

३४ मंडिरस्त्रा मंडिरस्त्रा च॥ मदिरागमगर्विता
मेधामेधकरामेध्या॥ माधवी मधुवर्दिनी
॥१७॥ मंत्रा मंत्रमयी माता॥ मयामहिममं
दिरा॥ मायरूपी मायधारी॥ मायस्त्रा माय
वादिनी॥ ३६॥ मया संकल्पजननी॥ मयं वा
दविनोदिनी॥ माया प्रपंचजननी॥ मायसं
सारतारिणी॥ ३७॥ मायमंत्रप्रसादा च॥ मा
या जनविमोहिनी॥ माया परा परारूपा॥ म ३८

हा विष्णुनिवासिनी॥ ३२०॥ महासंभवमाहे।
शी॥ महामंगलदायिनी॥ हिकाररूपी ही
केशी॥ हीकारफलदायिनी॥ २१॥ हिकारा
ध्विहृषीकेशी॥ हितकार्यप्रवर्दिनी॥ हिनोप
पाधिविनिर्मुक्ता॥ हानलोकविमोहिनी॥
२२॥ हीकारि ह्रीमति ह्रीं॥ ह्रीं देवि ह्रीं स्वप्ना
विनी॥ ह्रीं पत्नि ह्रीं पतिं ह्रीं स्त्रा॥ ह्रीं शीला
ह्रीं कुलोद्भवा॥ २३॥ हितवादि हितप्रीता॥

२० हितकारुण्यवादिनिःहिताशनाहितक्रो
धा॥ हितकर्मफलप्रदा॥ २४॥ हिमाहिमसु
म० ताहेमा॥ हिमाचलनिवासिनी॥ हिताहेम
प्रदादारा॥ हेत्राहेत्रेदुतप्रिया २५॥ हिमस्था
हिमसेतुणा॥ हिमस्थाहिमनाशिनी॥ धिका
ररूपा ध्रिषणा॥ धर्मरूपीधनेश्वरी॥ २६॥ ध
नुर्धराधराधारा॥ धर्मकर्मफलप्रदा॥ धर्म
चाराधर्मसारा॥ धर्ममार्गनिवासिनी॥ २७॥ २०

धनुर्वेदीधनुर्वीदी॥ धन्याधूर्तविनाशिनी॥ धन
धान्याधनरूपी॥ धनाद्याधनदायिनी॥ २८॥ धने
शीधर्मनिलया॥ धर्मराजप्रसादिनी॥ धर्मस्वा
रूपीधर्मेति॥ धर्माधर्मविचारिणी॥ २९॥ धर्म
सूक्ष्माधर्मसाक्षी॥ धर्मिष्ठाधर्मगोचरी॥ यका
ररूपायोगेशी॥ योगस्थायोगरूपिणी॥ ३०॥ यो
गायोगयोगयोग्या योगमार्गनिवासिनी॥ यो
गासनस्थायोग॥ स्त्रीयोगमायाविलासिनी

२३ ॥ ३१ ॥ योगयोगसमाराध्या ॥ योगांगयोगसंग्र
हः ॥ योगवासीयोगनोगी ॥ योगमार्जप्रदर्श
नी ॥ ३२ ॥ योधायोधकरीयोध ॥ योधयाचारत
त्परः ॥ योधनीयोधसामयी ॥ योधराष्ट्रवि
वर्धनिनी ॥ योधवादियोधसेता ॥ योधज्ञा ॥
योधनेदिनी ॥ ३३ ॥ योगीश्वरप्राणनाथा यो
गीश्वरहृदिस्थिता ॥ योगोयोगक्षेमकरी ॥
योगक्षेमविचारिणी ॥ ३४ ॥ योगयोगेश्वरा २१

राध्या ॥ योगानंदस्वरूपिणी ॥ नकाररूपाना
दात्मा ॥ नादबिंदुस्वरूपिणी ॥ ३५ ॥ नवसि
द्धसमाराध्या ॥ नारायणमनोहरी ॥ नाराय
णनवाधारा ॥ नवा बुभुक्षार्चितापदा ॥ ३६ ॥ न
गोधतानयाराध्या ॥ नामरूपविवर्जिता
नारसिंहार्चितपदा ॥ नवनिध्यादिसैवि शे
ता ॥ ३७ ॥ नटरूपानवीसाध्या ॥ नरनाराय
णार्चिता ॥ नदीनानर्मदानामा ॥ निर्मिना